Indian J. Soc & Pol. 03(01): 2016 :103-104 **ISSN 2348-0084(P)**
ISSN 2455-2127(O)

वर्तमान भारतीय समाज में शिक्षक की भूमिका : एक मीमांसा

राकेश कुमार पाण्डेय[1]
[1]प्रवक्ता,माधव इण्टर कालेज बमेला, हंडिया,इलाहाबाद,उ0प्र0, भारत

ABSTRACT

जिस तरह उपलब्ध कच्चे माल से कुशल कारीगर नाना प्रकार की उपयोगी वस्तुओं का निर्माण करता है, उसी तरह कुशल अध्यापक बच्चों के अनियंत्रित गुणों का परिमार्जन करके उनमें वांछित मानवीय गुणों का सृजन एवं संवर्धन करता है। इसीलिए शिक्षक को मानव शिल्पी भी कहा जाता है जो राष्ट्र विकास की धुरी एवं देश के भावी कर्णधारों का भविष्य निर्माता होता है साथ ही समाज या राष्ट्र के मूल्यों को अक्षुण्ण बनाए रखने में सक्षम होता है। शिक्षक समाज का सेवक होता है जो समाज की धड़कन को पहचान कर उसे नया जीवन दान देता है और नित्य नवीन प्रेरणा भी प्रदान करता है। शिक्षक में ऐसी अनूठी एवं अलौकिक शक्ति होती है जिसके बल पर वह छात्र में शीर्षस्थ गुणों का बीजारोपण कर उसका प्रारब्ध तक बदल सकता है। प्रस्तुत शोध पत्र में वर्तमान बदलते मूल्य विन्यास व सामाजिक संस्कारों में शिक्षक की भूमिका को रेखांकित करने का प्रयास किया गया है।

***KEYWORDS*:** *भारत, भारतीय समाज, मूल्य, शिक्षक,*

प्राचीन काल में शिक्षक को 'गुरू' का एवं गुरू को 'त्रिमूर्ति' का स्थान प्राप्त था। विवेकानन्द के अनुसार–'जो शिक्षक छात्रों के स्तर पर उतरकर उनकी आत्मा का परीक्षण करके शिक्षा देता है वही सच्चा शिक्षक है। वहीं 'श्री अरविन्द घोष' के अनुसार शिक्षक राष्ट्र की संस्कृति का चतुरमाली है, वह संस्कारों की जड़ों में ज्ञान की खाद देकर उसे महाणि बनाता है अर्थात् शिक्षक ही अज्ञान के अंधकार को दूर कर सद्गुणों को जागृत करने वाला, आशा का संचार करने वाला माना गया है।

शिक्षक के कन्धों पर अनेकानेक कर्त्तव्य सदैव रहे हैं उन्हें केवल पढ़ाना ही नहीं बल्कि बच्चों को मार्गदर्शन देना, सहायता करना भी रहा है परन्तु आज आधुनिक भारतीय समाज में 'शिक्षक सशक्तिकरण' हेतु शिक्षक को कक्षा में दृश्य–श्रव्य आदि साधन सामग्री को विनियोग द्वारा छात्र केन्द्रित विधियों को अपनाना होगा। आज बालक को कान नहीं बल्कि हाथ पकड़ कर चलना सिखाना होगा।

देश, काल व परिस्थिति के अनुसार शिक्षा में परिवर्तन होता रहता है। समाज में परिवर्तन शिक्षा द्वारा ही संभव हो सकता है। अतीत की शिक्षा में बालक के वैयक्तिक गुणों के विकास के साथ–साथ उसे अनुशासित, संस्कारी तथा तन, मन से स्वस्थ्य रहने पर जोर दिया जाता था किन्तु आधुनिक समय में शिक्षा का उद्देश्य बालक में, प्रकृति प्रदत्त गुणों के विकास के साथ–साथ उसे भरण–पोषण की शिक्षा देने पर बल दिया जाना अति आवश्यक है। भावी शिक्षा की संकल्पना में परिवर्तन के कारण बालक को किसी चहारदीवारी में, समय–सीमा व निर्धारित पाठ्य पुस्तक के अनुसार शिक्षा देना सम्भव नहीं है। ज्ञान के अत्यधिक विस्फोट के कारण बालक को मन्दिरों के विशाल प्रांगणों, मस्जिदों व गुरुद्वारों के साथ–साथ घने छायादार वृक्षों के नीचे शिक्षा देनी होगी। शिक्षक भी बदलने होंगे। वही शिक्षक कल शिक्षा देने का अधिकारी होगा जो अध्ययनशील, चिन्तक, मनीषी, विकासशील, तपस्वी, सदैव प्रसन्न चित्त व अध्येय भाव से परिपूर्ण होगा। अब कक्षा–कक्ष में वही अध्यापक प्रवेश का अधिकारी होगा जो ज्ञान के विस्फोट में, ज्ञान के संग्रहालय में विचारशील हो, चिन्तक और मननशील हो, सदैव हास्य के फौब्बारे छोड़ता हो, जो विकास का पथिक तथा ज्ञान पिपाशु होकर तन मन से सदैव तरोताजा रहता हो। वर्तमान शिक्षक और शिक्षण पद्धति को कल के विश्व के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने के लिए अपनी मंथर गति को तिलांजलि देकर राकेट की गति से चलना होगा।

आज का बालक सैटेलाइट और इन्टरनेट के युग का बालक है। तकनीकी विकास तथा सतत् परिवर्धित संचार माध्यमों ने न केवल उसे नूतन सूचनाओं के भण्डार से युक्त किया है अपितु दैनिक जीवन में अनिवार्य बनते वैज्ञानिक उपकरणों को उसके जीवन का स्वाभाविक अंग बना दिया है। आज सूचना तकनीकी का विस्फोट हो रहा है, छात्र को अनेक प्रकार की जानकारी सरलता से उपलब्ध है, मुक्त अधिगम की सुविधा प्राप्त है। इसीलिए छात्र स्वयं अपने प्रयासों से ज्ञान प्राप्त करने में सक्षम है। शिक्षा भी छात्र केन्द्रित हो गयी है। जहाँ पूर्व की आश्रम व्यवस्था से अब तक अध्यापक छात्र अन्तः क्रिया प्रमुख थी वहीं अब छात्र–छात्र और छात्र मीडिया के मध्य अन्तः क्रिया प्रबल है। इसके साथ ही यह भी सत्य है कि भारत जैसे गरीब और विकासशील देश में पारम्परिक विद्यालय और कक्षाएं एकाएक बन्द नहीं हो सकतीं। ऐसे में अनुदेशन प्रक्रिया की विविधता के कारण शिक्षक को अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है।

सूचना और प्रौद्योगिकी के कारण समाज व राष्ट्र की वर्तमान स्थिति में तीव्र परिवर्तन हो रहे हैं और इन परिवर्तनों के प्रभाव से विद्यालय भी अछूते नहीं हैं। ऐसे में प्रश्न उठता है कि क्या शिक्षक की भूमिका में बदलाव आएगा? यह प्रश्न भी वास्तव में समीचीन एवं संगतियुक्त है कि समाज व राष्ट्र के प्रति शिक्षक का क्या योगदान है? आज समय के दौड़ते चक्र में न

1: Corresponding Author

तो शिक्षक के पास समय है और न ही छात्र के पास। दोनों के मध्य बढ़ती दूरियां न केवल कक्षागत अनुदेशात्मक प्रक्रिया को प्रभावित कर रही है। बल्कि सम्पूर्ण विद्यालयी वातावरण को दूषित कर रही है। परिणामतः प्रत्येक स्तर पर ड्रॉप आउट, शिक्षक–विहीन कक्षाएं, शिक्षक–छात्र मन–मुटाव एवं छात्र असन्तोष दृष्टिगोचर हो रहा है। ऐसे में पुनः एक प्रश्न उद्वेलित करता है कि क्या शिक्षक विद्यालयी वातावरण को एक बार फिर मधुर–स्मिध और अधिगमानुकूल बनाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निर्वाह करने में सक्षम हो सकेगे।

आज के अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद के माहौल में राष्ट्र की धर्मनिरपेक्षता, प्रजातांत्रिक गणराज्य की विशेषताओं को बनाए रखने के लिए ऊर्जावान, निष्ठावान, ज्ञानवान, कर्तव्यनिष्ठ एवं देश क्त नागरिकों की आवश्यकता है जिन्हें तैयार करने का कार्य शिक्षक के अलावा किसी अन्य के द्वारा सं व नहीं है। इस कार्य हेतु कक्षा के अन्दर व बाहर दोनों जगह से करना होगा साथ ही वातावरण को संशोधित या परिमार्जित करने के साथ–साथ विद्यालयी वातावरण को संवर्धित करने का प्रयास भी करना होगा।राष्ट्र के अनुकूल नागरिक तैयार करने के लिए विद्यालयी परिसर को भौतिक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में संवर्धित करने की आवश्यकता है। यह शिक्षक के समक्ष एक समस्या भी है और चुनौती भी। शिक्षक को इस चुनौती को स्वीकार कर नवनिर्माण का पुरोधा बनना होगा।

आज मनोविज्ञान से प्रभावित शिक्षा बाल केन्द्रित हो गई है। छात्र को स्वयं अध्ययन की सुविधा प्राप्त है और विज्ञान एवं तकनीकी प्रभाव शिक्षक को हाशिये पर खिसकाते जा रहे हैं इसलिए यह कहा जा सकता है कि शिक्षक अपने परिसर में उपलब्ध सामग्री, संसाधनों और अनुकूल अधिगम अवसरों द्वारा अपने अधिकतम अनुभवों को प्रदान करके अधिगमानुकूल वातावरण निर्मित करने में समर्थ हो सकेगा।

कक्षा–कक्ष में अब पुस्तकों व शिक्षकों द्वारा शिक्षा देना सहायक नहीं होगा। अब तो कल का बालक अपने शहर के पुस्तकालय से अथवा गांवों में ग्राम पंचायतों की दीवारों पर स्फूर्तिक द्वारा संचालित टी.वी. देखकर बहुत कुछ सीख लेगा। शिक्षक की भाषण पद्धति मर्यादित होगी। विषय में वही अध्यापक वास्तविक शिक्षक होगा जो विद्यार्थियों की चुनौतियों का सामना कर सकेगा। डॉ. दौलत भाई के मतानुसार मात्र सूचनाओं को कंठस्थ करने वाला रट्टू तोता अब पिंजरे से उड़ जाएगा। गांव, कस्बा तथा शहरों में संचालित हो रहे उद्योग, हंसी तथा मनोरंजन स्थलों पर कक्षाएं आयोजित होगी। कल का बालक उसी दशा में कक्षा–कक्ष में बैठेगा जबकि शिक्षक उसे कक्षा–कक्ष में बैठा कर तल्लीन कर दे। शिक्षक को ज्ञानवान होने का अपना दम्भ का चोंगा उतार कर फेंक देना होगा। अब वे ही शिक्षक सफल शिक्षक माने जाएंगे जो विद्यार्थी को आत्मातिरेक से ओत–प्रोत करके उसका ऊर्ध्वगामी विकास कर सकें। अब कक्षा में शिक्षक कम बोलेगा। विद्यार्थी अधिक सक्रिय होगा, वह अधिक अध्ययनशील होगा, चिन्तन–मनन करेगा, तथा प्रश्न करेगा।

अतः अब शिक्षा में परिवर्तन होने के साथ–साथ शिक्षक में भी परिवर्तन होना अनिवार्य है। आज बालक मनोविज्ञान के सीखने के सिद्धान्तों पर स्वयं करके और अनुभव द्वारा सीखता है तो वहाँ इस हाइटेक समाज में परामर्शदाता के रूप में शिक्षक का महत्व बहुत बढ़ जाता है। ऐसे में उसका इन तकनीकियों से अनभिज्ञता उसके अस्तित्व पर एक प्रश्नचिन्ह लगा देती है। अर्थात् जैसे मन्दिर के जीर्णोद्धार के बाद पुजारी, हल बदलने के पश्चात् यदि हलधर में परिवर्तन न हो अथवा तोप बदलने के बाद तोपची पुराना ही हो तो ऐसे परिवर्तन का क्या कोई प्रभाव पड़ेगा?

अतः निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि मित्र, निर्देशक, परामर्शदाता, चरित्र–निर्माता, अभिप्रेरक, सुविधा प्रदान करने वाला मॉडल, संचालक, व्यवस्थापक, समाजीकरण के अभिकर्ता के रूप में अनेक भूमिकाओं का निर्वाह करते हुए शिक्षक विद्यालय के वातावरण को संवर्धित कर सकता है।शिक्षक जो राष्ट्र का हितैषी है, छात्रों के उन्नयन के लिए सदैव प्रयत्नशील भी रहता है। बस आवश्यकता है तो छात्रों को प्रेम करने की, उनके साथ समय बिताने की, छात्रों के साथ कार्य करने की, आवश्यकतानुसार समस्या समाधान करने की, स्वयं के चरित्र से छात्रों के चरित्र को उकेरने की। शिक्षक की महानता के रूप में जब तक्षशिला का एक गुरू सैनिक को राजा बना सकता है, सम्पूर्ण देश को धन–सम्पन्न बना सकता है तो शिक्षक होने के नाते हम भी भावी–पीढ़ी के उत्थान और राष्ट्र निर्माण के लिए चाणक्य जैसी शक्ति को धारण कर सकते हैं ।

संदर्भ

मित्तल, एम.एल. (2006): *उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक,* इण्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस मेरठ,

शर्मा, रामनाथ, व राजेन्द्र कुमार शर्मा(1996) : *शिक्षा दर्शन,* एटलांटिक पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स नई दिल्ली,

पाण्डेय, राम शकल (1999): *शिक्षा की दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय पृष्ठभूमि,* विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

शास्त्री, के.एन.(2006) : *उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा,* अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली,

त्यागी, बी.पी.(2005) : शिक्षा के दार्शनिक आधार, आविष्कार पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, जयपुर

पाण्डेय, के.पी.(2005) : शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक आधार, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी,